

श्री अजितनाथ जिन पूजन

रचयिता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद-रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

आओ तिष्ठो हे प्रभो, अजितनाथ भगवान ।
हृदय कमल मेरे बसो, विनय सहित आव्हान ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

(सोरठा)

महामोह विनशाय, जनम मरण क्षय कारणे ।
निर्मल नीर मंगाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा भाव सुखदाय, भव आतप को क्षय करे ।
चन्दन चरण चढ़ाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय नही परभाव, मान करे किस हेतु रे ।
अक्षत आत्म स्वभाव, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कुटिल दुखदाय, कोमल रख परिणाम निज ।
कोमल कुसुम चढ़ाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव अमि रस पाय, क्षय हो क्षुत्पीडा प्रभो ।

षटरस नेवज लाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक विलसाय, आत्मलीन तुझ ज्ञान में ।

दीपक रतन मंगाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म सकल सुलगाय, आत्म ध्यान की वन्हि में ।

धूप सुवासित लाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम को ध्याय, महा मोक्ष फल पाइये ।

पक्व सरस मंगवाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज वैभव ही भाय, अहो अमोलक संपदा ।

उत्तम अर्घ्य चढ़ाय, अजित नाथ जिन पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छंद धत्तानंद)

तीर्थकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।

पांचो कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद अडिल्ल)

तज वैजयंत अजित जिन आए सुरग से ।

जेठ कृष्ण अमावसि माता उर बसे ।

छप्पन कुमारी अष्ट देवियां आ गई ।

सेवा चर्चा माता मन बहला गई ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न बरसते मास पंच दश जब हुए ।
माघ शुक्ल दशमी मन मोदित सब हुए ।
प्रभु जन्मोत्सव सुरपति नरपति मिल किए ।
पांडुक पर अभिषेक देख हरषे हिये ।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल नवम दिन मन वैराग्य धर ।
श्री अजित वन चले गृहांगण छोड़कर ।
सुर सुरेंद्र आए लौकांतिक देव भी ।
मनुज चले लेने दीक्षा स्वयमेव भी ।

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी जिन केवल लहा ।
समवसरण रच देव करे उत्सव महा ।
भवि भागन वश दिव्यध्वनि नभ तें झरी ।
किया पुरुषार्थ अरे जिसने उर अवतरी ।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल एकादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट सिद्धवर तीर्थधाम सम्मेद से ।
चैत्र शुक्ल पंचमी प्रभु शिव जा बसे ।
कर्म नहीं संयोग नहीं तन शेष है ।
सदा रहेंगे शुद्ध आत्म निर्वेश रे ।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अजित जीत सब कर्म को, हुए सिद्ध परमेश ।
रहें हमारे ध्यान नित, संकट रहे न शेष ।

(छंद पद्धति)

जय द्वितीय तीर्थ नायक जिनेश, जय अजितनाथ प्रभुवर गुनेश ।
जय मोह विजय सदृष्टि धार, संवरमय निज आत्म निहार ।

तुम सर्व कषाएं कर विनाश, हो वीतराग तिहुंजग प्रकाश ।
 सुन दिव्य ध्वनि भवि मोद धार, पावें शिवमग तत्त्वार्थ सार ।
 होकर अयोग धर परम योग, इर्यापथ अंतिम अंत रोग ।
 तज चरम देह संयोग शेष, नही लेश रहे तब कहां क्लेश ।
 गति उर्ध्वगमन निजभाव पाय, श्री अजितनाथ लोकान्त जाय ।
 सब कर्म अघाती हुए नाश, चैतन्य विमल ज्योति प्रकाश ।
 हो नित्य निरंजन ज्ञानमयी, भज परम समाधि कल्याण मयी ।
 ध्यानाग्नि माहि सब कर्म जरे, परमात्म प्रकाशक भाव वरे ।
 सब द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, स्वाभाविक गुण परिणाम सहित ।
 परभाव रहित निज आत्मवास, चिद्वैभव में ही चिर विलास ।
 क्षायिक समकित कैवल्य ज्ञान, दर्शन अनंत है वीर्यवान ।
 अवगाहन सूक्ष्म गुण सुहाय, अगुरुलघु अव्याबाध पाय ।
 ये कथन मात्र गुण कहे आठ, सब ही अनंत जिन लहे ठाठ ।
 स्वाभाविक परिणति का विकास, चैतन्यचन्द्र का पूर्णमास ।
 ध्रुव अचल अनुपम गति सुहाय, लख तुमको प्रभु निज समय भाय ।
 तुमको निज में जिन थाप अरे, तुम सम निज गुण नित जाप करें ।
 तज धर्म अर्थ पुरुषार्थ काम, पाया अपवर्गी मोक्षधाम ।
 पंचम गति को तुम प्राप्त सिद्ध, हो साध्य भविक को प्रभु प्रसिद्ध ।

(छंद धत्तानंद)

तीर्थकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।
 तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अजितनाथ जिनराज के, सिद्ध हुए सब काज ।
 उनके पथ पर हम चलें, मिले मुक्ति साम्राज्य ।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।